DESIGNATION: ASSITANT PROFESSOR (GUEST)
FACULTY'S NAME: SHIVI SINHA
COLLEGE: VAISHALI MAHILA COLLEGE
CLASS TEACHING IN: B.A. PART-I (HONS.)
PAPER TEACHING: PAPER-I
SUBJECT TEACHING: INDIAN PHILOSOPHY

Scanned with CamScanner

B.A. Part-I (Hons.)

Paper-I Indian Philosophy

SHIVI SINHA
Assistant Prof. (Guest)
Vaishali Mahila College

Ramanuja's - Brahman Vichar

Date: 18/9/2020

Topic - Seven Classical Refutation of Maya
विषय - रामानुज सप्तानुपपत्ति (7 तर्क माया के विरुद्ध)

(i) आश्रयानुपपत्ति :-

रामानुज कहते हैं कि शंकर माया के आश्रय की युक्तिसंगत व्याख्या नहीं करते। शंकर कहते हैं कि माया (अविद्या) ब्रह्म में रहती है इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि ब्रह्म पूर्णज्ञान स्वरूप है। अतः माया ब्रह्म का आश्रय नहीं हो सकती। जीव भी माया का आश्रय नहीं हो सकता, क्योंकि जीवभाव अज्ञान के द्वारा पैदा हुआ है। इसी प्रकार माया अपना आश्रय स्वयं नहीं हो सकती अर्थात- माया स्वाश्रित नहीं हो सकती, क्योंकि स्वाश्रित तो केवल ब्रह्म है।

(ii) तिरोधान अनुपपत्ति :-

शंकर कहता है कि माया, ब्रह्म के स्वरूप को ढक देती है। रामानुज कहता है कि यह बिलकुल अनुपयुक्त बात है, क्योंकि ब्रह्म स्वप्रकाश है अर्थात जो स्वयं अपने ही द्वारा प्रकाशित है, उसे माया कैसे ढक सकती है।

Scanned with CamScanner

(iii) स्वरूप अनुपपत्ति :-

शंकर माया के स्वरूप की युक्तिसंगत व्याख्या नहीं करते, क्योंकि वे कहते हैं कि यह माया अभावात्मक तथा भावात्मक दोनों है। रामानुज कहते हैं कि इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि या तो कोई चीज सत् है या असत्, कोई भी चीज एक साथ सत् और असत् नहीं हो सकती। अब यदि माया को भावात्मक माना जाए, तो वह कभी नष्ट नहीं हो सकती परिणामस्वरूप ब्रह्म ज्ञान भी नहीं हो सकता। इसी प्रकार यदि माया को निषेधात्मक मानें, तो वह ब्रह्म के स्वरूप को ढक ही नहीं सकती।

Scanned with CamScanner